I

Lecture NO:- 69.

Topic,

(1.) Simple.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part -I
Paper - II (H.)
A.N.D.College Shahpur Patory, Samastipur,

Ans.:-> मन एक कोरी पट्टी है। लॉक की यह मान्यता है कि प्रारंभ में मनुष्य का मन एक खाली पट्टी है। लॉक के अंधेरे कमरे, एक खाली आलमारी या सफेद कागज की भाँति होता है। जिसमें कोई भी चिन्ह या प्रत्यय नहीं होता, वह अन्य विद्वानों के इस विचार से सहमत नहीं है। ईश्वर ने हमारे मन में कुछ सहजात प्रत्यय रखे हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि मानव मन में प्रत्यय कहाँ से आते है। मन स्वयं ज्ञान के उद्भव का स्रोत होता है?

इस प्रश्न का उत्तर लॉक स्वयं देता है कि ज्ञान अनुभव से प्राप्त होता है। अनुभव ही समस्त

P.T.O

को तीन (रत्नों) का पालन करना चाहिए। ये तीन रत्नों हैं— सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र सम्यक ज्ञान (आचरण)

(i) उचित दर्शन (सम्यक दर्शन) :- यहां 'दर्शन' शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया गया है, यहां दर्शन का अर्थ तत्वज्ञान के प्रति-

विश्वास या श्रद्धा है। मोक्ष प्राप्त करनेवालों कि यहां अंधविश्वास को आश्रय दिया गया हो, पश्चात जैनदार्शनिक मणिभद्र ने ठीक ही कहा है, "मैं युक्तिसंगत वचन को ही मानता हूँ चाहे, वह जिस किसी का भी हो।" इस प्रकार, केवल युक्तिसंगत बात में ही श्रद्धा या विश्वास आवश्यक माना गया है।

पाश्चात्य विचारक भी ज्ञान etc.

END,